पुणना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VIII

Hindi

Specimen copy

Year- 2020-21

Semester- 2

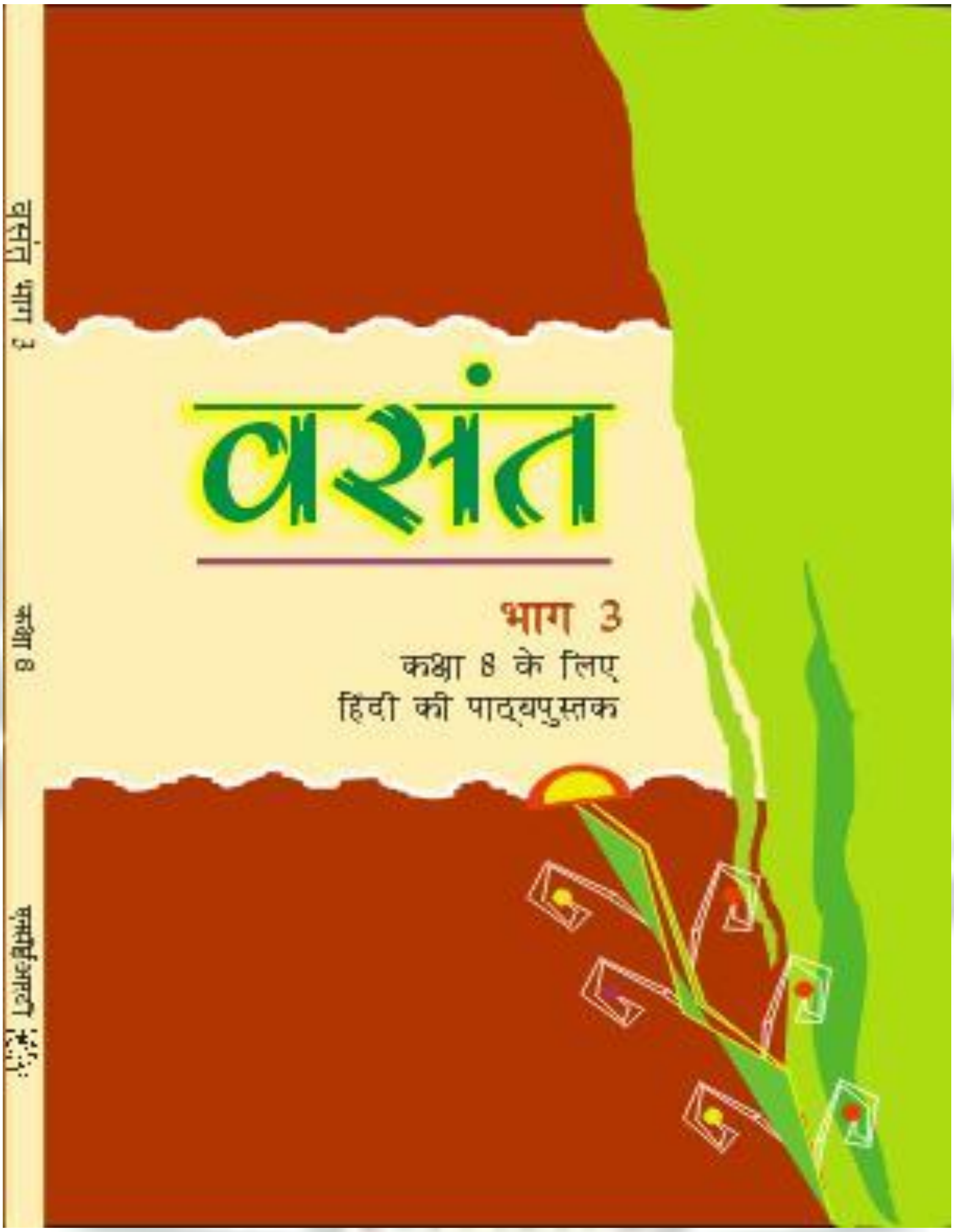
वसंत भाग 3
कक्षा 8
एनसीईआरटी
वसंत
भाग 3
कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

पाठ 10 कामचोर

लेखिका – इस्मत चुगताई

जन्म – 15 अगस्त 1915

मृत्यु – 24 अक्टूबर 1991

स्थान – बदायूँ (उत्तर प्रदेश)

भाषा – उर्दू।

* पाठ-सार

इस कहानी द्वारा लेखिका यह बताती है कि किसी कामचोर बच्चे से काम कराने से पहले सही तरीके से उसे काम करना सीखना चाहिए नहीं तो सब उल्टा पुलटा हो जाता है। प्रस्तुत पाठ "कामचोर"में भी जब बच्चों को घर के कुछ काम जैसे गन्दी दरी को झाड़ कर साफ करना, आँगन में पड़े कूड़े को साफ़ करना, पेड़ों में पानी देना आदि बताए गए और कहा गया कि अगर वे यह सब काम करेंगे तो उन्हें कुछ-न-कुछ ईनाम के तौर पर मिलेगा। ईनाम के लालच में बच्चों ने घर के काम करने की ठान ली। परन्तु बच्चों ने जब कोई भी कोई भी काम करना शुरू किया किसी भी काम को सही से खत्म करने के बजाए उन्होंने सारे कामों को और ज्यादा ख़राब कर दिया। जिससे घर के सभी सदस्य परेशान हो गए और बच्चों को घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि अगर अब किसी भी बच्चे ने घर के किसी भी सामान को हाथ लगाया तो उन्हें रात का खाना नहीं मिलेगा। इस पर बच्चों को समझ नहीं आ रहा था कि घर वाले न तो उन्हें काम करने देते हैं और न ही बैठे रहने देते हैं। लेखिका के अनुसार ऐसा इसलिए हो रहा था क्योंकि घर वालों ने बच्चों को काम तो बता दिए थे परन्तु काम करने का सही तरीका नहीं समझाया था।

* शब्दार्थ

1) वाद-विवाद- बहस
2) खुद- अपने आप
3) कामचोर- आलसी
4) दबैल- दब्बू
5) घमासान- भयानक
6) हरगिज- बिलकुल
7) फरमान- आज्ञा
8) दुहाई- कसम
9) मिसाल- उदाहरण
10) मैली- गन्दी
11) मुफ्त- फोकट
12) हवाला- उल्लेख करना
13)याचना- प्रार्थना
14) तनख्वाह- पगार या वेतन
15) फर्शी- फर्श पर बिछी हुई
16) धुआँधार- ताबड़तोड़

* साहित्य-विभाग- प्रश्न अभ्यास

1) कहानी में "मोटे-मोटे किस काम के हैं"?किन के बारे में और क्यों कहा गया?

उ- कहानी में "मोटे-मोटे किस काम के हैं" बच्चों के बारे में कहा गया है क्योंकि वे घर के कामकाज में जरा सी भी मदद नहीं करते थे तथा दिन भर खेलते-कूदते रहते थे।

2) बच्चों के उधम मचाने के कारण घर कि क्या दुर्दशा हुई?

उ- बच्चों के उधम मचाने से घर की सारी व्यवस्था ख़राब हो गई। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढक गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में धुल, मिट्टी और कीचड़ का ढेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गई। मुर्गे-मुर्गियों के कारण कपड़े गंदे हो गए।

3) "या तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। "अम्मा ये कब कहा और इसका परिणाम क्या हुआ?

उ- अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर की हालत को देखकर ऐसा कहा था। जब पिताजी ने बच्चों को घर के काम काज में हाथ बँटाने की नसीहत दी तब उन्होंने किया इसके विपरीत सारे घर को तहस-नहस किया। चारों तरफ़ समान बिखरा दिया, मुर्गियों और भेड़ों को घर में घुसा दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि काम करने के बजाए उन्होंने घर का काम कई गुना बढ़ा दिया जिससे अम्मा जी बहुत परेशान हो गई थीं। उन्होंने पिताजी को साफ़-साफ़ कह दिया कि या तो बच्चों से करवा लो या मैं मायके चली जाती हूँ। इसका परिणाम ये हुआ कि पिताजी ने घर की किसी भी चीज़ को बच्चों को हाथ ना लगाने की हिदायत दे डाली नहीं तो सज़ा के लिए तैयार रहने को कहा।

4)"कामचोर "कहानी क्या संदेश देती है?

उ- यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है की बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार, उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए। जिससे वे बचपन से ही रचनात्मक कार्यों में लगन तथा रूचि का परिचय दे सकें। उनके ऊपर बड़ों की जिम्मेदारी थोपना बचपन को कुचलना है। अतः बड़ों को चाहिए की समझदार बच्चा बनकर बच्चों के बीच रहें और उन्हें सही दिशा प्रदान करें।

5)क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगें ?

उ- बच्चों द्वारा लिया गया निर्णय उचित नहीं था क्योंकि स्वयं हिलकर पानी न पीने का निश्चय उन्हें और भी कामचोर बना देगा। उन्हें काम तो करना चाहिए पर समझदारी के साथ। बच्चों को घर-परिवार के काम धंधों को आपस में बाँट कर, बड़ों से समझ कर पूरा करना चाहिए। उन्हें अपने खाली समय का सदुपयोग करना चाहिए तथा रचनात्मक कार्यों में मन लगाते हुए परिवार-वालों का सहयोग करना चाहिए।

* दीर्घ उत्तर प्रश्न

1) घर के सामान्य काम हों या अपना निजी काम, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें करना आवश्यक क्यों है?

उ- यह इसलिए भी जरूरी है कि यदि हम अपने घर का काम या अपना निजी काम, नहीं करेंगे तो हम कामचोर बन जाएँगे और दूसरों पर आश्रित हो जाएँगे और ये निर्भरता हमें निकम्मा बना देगी। इसलिए हमें चाहिए कि अपने काम दूसरों से ना करवाकर स्वंय करें अपने काम के लिए आत्मनिर्भर बनें। हमें चाहिए कि हम अपने काम के साथ-साथ दूसरों के काम में भी मदद करें। अपना काम अपने अनुसार और समय पर किया जा सकता है।

2) भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधर पर निर्णय कीजिए।

उ- यदि सारा-परिवार मिल जुलकर कार्य करे तो घर को सुखद बनाया जा सकता है। इससे घर के किसी भी सदस्य पर अधिक कार्य का दबाव नहीं पड़ेगा। सब अपनी अपनी कार्यक्षमता के आधार पर कार्य को बाँट लें व उसे समय पर निपटा लें तो सब को एक दूसरे के साथ वक्त बिताने का अधिक समय मिलेगा इससे सारे घर में आपसी प्रेम का विकास होगा और खुशहाली ही खुशहाली होगी। इसके विपरीत यदि घर के सदस्य घर के कामों के प्रति बेरूखा व्यवहार रखेंगे और किसी भी काम में हाथ नहीं बटाएँगे तो सारे घर में अशांति ही फैलेगी, घर में खर्च का दबाव बनेगा, घर के सभी सदस्य कामचोर बन जाएँगे और अपने कामों के लिए सदैव दूसरों पर निर्भर रहेंगे जिससे एक ही व्यक्ति पर सारा दबाव बन जाएगा। यदि इन सबसे निपटने की कोशिश की गई तो वही हाल होगा जो कामचोर में घर के बच्चों ने घर का किया था। वे घर की शन्ति व सुःख को एक ही पल में बर्बाद कर देंगे। इसलिए चाहिए कि बचपन से ही बच्चों को उनके काम स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए ताकि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाया जाए और घर के प्रति ज़िम्मेदार भी।

3) बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता-पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार? कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ- अगर बच्चों को बचपन से अपना कार्य स्वयं करने की सीख दी जाए तो बड़े होकर बच्चे माता-पिता के बहुत बड़े सहयोगी हो सकते हैं। वह अगर अपने आप नहा धोकर स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने जुराब स्वयं धो लें व जूते पालिश कर लें, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें तो माता-पिता का बहुत सहयोग कर सकते हैं। यदि इससे उलटा हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता-पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था।

व्याकरण विभाग

*** कारक की परिभाषा -**

कारक शब्द का अर्थ होता है- क्रिया को करने वाला। क्रिया को करने में कोई न कोई अपनी भूमिका निभाता है, उसे कारक कहते है। अथार्त संज्ञा और सर्वनाम का क्रिया के साथ दूसरे शब्दों में संबंध बताने वाले निशानों को कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका (संज्ञा या सर्वनाम का) सम्बन्ध सूचित हो, उसे (उस रूप को) 'कारक' कहते हैं।

उदाहरण -

श्रीराम **ने** रावण **को** बाण **से** मारा।

इस वाक्य में प्रत्येक शब्द एक-दूसरे से बँधा है और प्रत्येक शब्द का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में क्रिया के साथ है।

1) कर्ता कारक

जो वाक्य में कार्य करता है, उसे कर्ता कहा जाता है। अथार्त वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले, उसे कर्ता कहते हैं।
दूसरे शब्द में–क्रिया का करने वाला 'कर्ता' कहलाता है।
जैसे –

- राम ने रावण को मारा।
- लड़की स्कूल जाती है।

पहले वाक्य में क्रिया का कर्ता राम है। इसमें "ने" कर्ता कारक का विभक्ति-चिह्न है। इस वाक्य में "मारा"भूतकाल की क्रिया है। "ने"का प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है। दूसरे वाक्य में वर्तमानकाल की क्रिया का कर्ता लड़की है। इसमें "ने" विभक्ति का प्रयोग नहीं हुआ है।

2) कर्म कारक
जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का प्रभाव पड़े, उसे कर्म कारक कहते है।
दूसरे शब्दों में–वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते है।
इसकी विभक्ति 'को' है। लेकिन कहीं-कहीं पर कर्म का चिन्ह लोप होता है।

जैसे– माँ बच्चे को सुला रही है।
इस वाक्य में सुलाने की क्रिया का प्रभाव बच्चे पर पड़ रहा है। इसलिए 'बच्चे को' कर्म कारक है।

- राम ने रावण को मारा।
  यहाँ 'रावण को' कर्म है।
- बुलाना, सुलाना, कोसना, पुकारना, जमाना, भगाना आदि क्रियाओं के प्रयोग में अगर कर्म संज्ञा हो, तो 'को' विभक्ति जरुर लगती है।

जैसे –

(i) अध्यापक, छात्र को पीटता है।

(ii) सीता फल खाती है।

(iii) ममता सितार बजा रही है।

(iv) राम ने रावण को मारा।

(v) गोपाल ने राधा को बुलाया।

(vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।

3) करण कारक
जिस वस्तु की सहायता से या जिसके द्वारा कोई काम किया जाता है, उसे करण कारक कहते है।
दूसरे शब्दों में – वाक्य में जिस शब्द से क्रिया के सम्बन्ध का बोध हो, उसे करण कारक कहते है। इसकी विभक्ति 'से' है।

'करण' का अर्थ है 'साधन'। अतः 'से' चिह्न वहीं करणकारक का चिह्न है, जहाँ यह 'साधन' के अर्थ में प्रयुक्त हो।

जैसे –

हम आँखों से देखते है।

इस वाक्य में देखने की क्रिया करने के लिए आँख की सहायता ली गयी है। इसलिए आँखों से करण कारक है।

4) संप्रदान कारक– सम्प्रदान कारक का अर्थ होता है– देना। जिसके लिए कर्ता काम कर्ता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक के विभक्ति चिन्ह के लिए और को होता है। इसको किसके लिए प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी पहचाना जा सकता है। समान्य रूप से जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

(i) **गरीबों** को खाना दो।
(ii) **मेरे** लिए दूध लेकर आओ।
(iii) माँ **बेटे** के लिए सेब लायी।
(iv) अमन ने **श्याम** को गाड़ी दी।
(v) मैं **सूरज** के लिए चाय बना रहा हूँ।
(vii) **भूखे** के लिए रोटी लाओ।
(viii) वे **मेरे** लिए उपहार लाये हैं।
(ix) सोहन **रमेश** को पुस्तक देता है।

लेखन –विभाग

आलस्य पर अनुच्छेद

ऐसी मानसिक या शारीरिक शिथिलता जिसके कारण किसी काम को करने में मन नहीं लगता आलस्य है । कार्य करने में अनुत्साह आलस्य है । सुस्ती और काहिली इसके पर्याय हैं । संतोष की यह जननी है, जो –मानवीय प्रगति में बाधक है । वस्तुतः यह ऐसा राजरोग है, जिसका रोगी कभी नहीं संभलता । असफलता, पराजय और विनाश आलस्य के –अवश्यम्भावी परिणाम हैं ।आलसियों का सबसे बड़ा सहारा "भाग्य" होता है । उन लोगों का तर्क होता है कि होगा वही जो रामरुचि रखा । प्रत्येक कार्य को भाग्य के भरोसे छोड़कर आलसी व्यक्ति परिश्रम से दूर भागता है । इस पलायनवादी प्रवृत्ति के कारण आलसियों को जीवन में सफलता नहीं मिल पाती । भाग्य और परिश्रम के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए सभी विचारकों ने परिश्रम के महत्व को स्वीकार किया है और भाग्य का आश्रय लेने वालों को मूर्ख और कायर बताया है । बिना परिश्रम के तो शेर को भी आहार नहीं मिल सकता । यदि वह आलस्य में पड़ा रहे, तो भूखा ही मरेगा ।स्वामी रामतीर्थ ने आलस्य को मृत्यु मानते हुए कहा, आलस्य आपके लिए मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है । संत तिरूवल्लुवर कहते हैं, उच्च कुल रूपी दीपक, आलस्य रूपी मैल लगने पर प्रकाश में घुटकर बुझ जाएगा ।संत विनोबा का विचार है, दुनिया में आलस्य बढ़ाने सरीखा दूसरा भयंकर पाप नहीं है । विदेशी विद्वान जैरेमी टेरल स्वामी रामतीर्थ से सहमति प्रकट करते हुए कहता है, आलस्य जीवित मनुष्य को दफना देताहै ।आलस्य के दुष्परिणाम केवल विद्यार्थी जीवन में भोगने पड़ते हों, ऐसी बात नहीं । जीवन के सभी क्षेत्रों

में उसके कड़वे घूंट पीने पड़ते हैं ।शरीर को थोड़ा कष्ट है, आलस्यवश उपचार नहीं करवाते । रोग धीरे-धीरे बढ़ता जाता है । जब आप डॉक्टर तक पहुँचते हैं, तब तक शरीर पूर्ण रूप से रोगग्रस्त हो चुका होता है, रोग भयंकर रूप धारण कर चुका होता है ।खाने की थाली आपके सामने है । खाने में आप अलसा रहे हैं, खाना अस्वाद बन जाएगा । घर में कुर्सी पर बैठे-बैठे छोटी-छोटी चीज के लिए बच्चों को तँग कर रहे हैं, न मिलने या विलम्ब से मिलने पर उन्हें डांट रहे हैं, पीट रहे हैं, घर का वातावरण अशांत हो उठता है-केवल आपके थोड़े से आलस्य के कारण ।आलस्य में दरिद्रता का वास है । आलस्य परमात्मा के दिए हुए हाथ-पैरों का अपमान है । आलस्य परतन्त्रता का जनक है । इसीलिए देवता भी आलसी से प्रेम नहीं करते अतः आलस्य को अपना परम शत्रु समझो और कर्तव्यपरायण बन परिस्थिति का सदुपयोग करते हुए उसे अपने अनुकूल बनाओ । कारण, कार्य मनोरथ से नहीं, उद्यम से सिद्ध होते हैं । जीवन के विकास-बीज आलस्य से नहीं, उद्यम से विकसित होते हैं

*** गतिविधि**

आलसी एवं मेहनती लोगों के चित्र बनाइए।

भारत की खोज

पाठ 3 सिंधु घाटी की सभ्यता

1 भारत के अतीत की सबसे पहली तसवीर कहाँ से मिली?

उ सिंधु घाटी सभ्यता से

2 सिंधु घाटी सभ्यता ने किससे संबंध स्थापित किया?

उ फारस, मेसोपोटामिया, मिश्र की सभ्यताओं से

3 सिंधु सभ्यता के लोग कहाँ से आए थे?

उ दक्षिण भारत से

4 सिंधु नदी किसके लिए प्रसिद्ध हैं?

उ भयंकर बाढों के लिए

5 आर्यो का प्रवेश कब हुआ?

उ सिंधु घाटी युग के लगभग एक हजार वर्ष बाद

पाठ- 12 सुदामा चरित

कवि : नरोत्तम दास

जन्म : सन् 1550 में

स्थान : उत्तर-प्रदेश के सीतापुर जिले में।

मृत्यु : सन् 1605

*** पाठ प्रवेश –**

"सुदाम चरित्र" कृष्ण और सुदामा पर आधारित एक बहुत सुन्दर रचना है। इसके कवि नरोत्तम दास जी हैं, नरोत्तम दास जी ने इस रचना को दोहे के रूप में प्रस्तुत किया है और ऐसा लगता है जैसे दोहा न हो कर श्री कृष्ण और सुदामा की कथा पर आधारित नाटक प्रस्तुत हो रहा है। "सुदामा चरित" के पदों में नरोत्तम दास जी ने श्री कृष्ण और सुदामा के मिलन, सुदामा की दीन अवस्था व कृष्ण की उदारता का वर्णन किया है। सुदामा जी बहुत दिनों के बाद द्वारिका आए। कृष्ण से मिलने के लिए कारण था, उनकी पत्नी के द्वारा उन्हें जबरदस्ती भेजा जाना। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। बहुत दिनों के बाद दो मित्रों का मिलना और सुदामा की दीन अवस्था और कृष्ण की उदारता का वर्णन भी किया गया है। किस तरह से उन्होंने मित्रता धर्म निभाते हुए सुदामा के लिए उदारता दिखाई, वह सब किया जो एक मित्र को करना चाहिए। साथ ही में उन्होंने श्री कृष्ण और सुदामा की आपस की नोक–झोक का बड़ी ही कुशलता से वर्णन किया है। इसमें उन्होंने यह भी दर्शाया है कि श्री कृष्ण कैसे अपने मित्रता धर्म का पालन बिना सुदामा के कहे हुए उनके मन की बात जानकर कर देते हैं। मित्र का यह सबसे प्रथम

कर्तव्य रहता है कि वह अपनी मित्र के बिना कहे उसके मन की बात और उसकी अवस्था को जान ले और उसके लिए कुछ करें और उदारता दिखाऐं यही उसकी महानता है।

* शब्दार्थ

1)पगा- पगड़ी
2)झगा- कुरता
3)तन- शरीर
4)द्वार - दरवाजा
5)खड़ो- खड़ा है
6)द्विज दुर्बल- दुर्बल ब्राहमण
7)ऐसे बेहाल- बुरे हाल
8)बिवाइन सों- फटी ऐड़िया
9)पग- पाँव
10)कंटक- काँटा
11)पुनि जोए- निकालना
12)कछु- कुछ
13)काहे न देत- किस कारण
14)चाँपि- छिपाना
15)पोटरी- पोटली
16)चाबि- चबाना
17)उठि मिलनि- गले मिलना
18)पठवनि- भेजना
19)जात- जाति
20) हरि- कृष्ण
21)राज-समाज- राज्य में
22)ओड़त फिरे- इधर उधर फिरना
23)तनक- थोड़ा
24)वैसोई- वैसे
25)गज-बाजि- हाथी घोड़ा
26)संभ्रम छायो- भ्रम हो गया
27)पर्याउे- अनजान
28)मारग- रास्ता
29)छानी- झोंपड़ी
30)कंचन- सोने
31)धाम- महल
32)पनही- जूता
32)गजराजहु- हाथियों के ठाट-बाट

* साहित्य

1) सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई?

उत्तर- सुदामा की हालत देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

2)पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए। पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि श्रीकृष्ण ने अपने बालसखा सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मंगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर उनको इतना कष्ट हुआ कि आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

3)"चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।
इस उपालंभ "शिकायत" के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर- यहाँ श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं कि तुम्हारी चोरी करने की आदत या छुपाने की आदत अभी तक गई नहीं। लगता है इसमें तुम पहले से अधिक कुशल हो गए हो। सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप कुछ चावल भिजवाए थे। संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को यह भेंट नहीं दे पा रहे हैं। क्योंकि कृष्ण अब द्वारिका के राजा हैं और उनके पास सब सुख-सुविधाएँ हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।
इस शिकायत के पीछे एक पौरोणिक कथा है। जब श्रीकृष्ण और सुदामा आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। उस समय एक दिन वे जंगल में लकड़ियाँ चुनने जाते हैं। गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। उसी चोरी की तुलना करते हुए श्रीकृष्ण सुदामा को दोष देते हैं।

4) द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे?

उत्तर- द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे कि जब वे कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण ने आनन्द पूर्वक उनका आतिथ्य सत्कार किया था। क्या वह सब दिखावटी था? वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे क्योंकि केवल आदर-सत्कार करके ही श्रीकृष्ण ने सुदामा को खाली हाथ भेज दिया था। वे तो कृष्ण के पास जाना ही नहीं चाहते थे। परन्तु उनकी पत्नी ने उन्हें जबरदस्ती मदद पाने के लिए कृष्ण के पास भेजा। उन्हें इस बात का पछतावा भी हो रहा था कि माँगे हुए चावल जो कृष्ण को देने के लिए भेंट स्वरूप लाए थे, वे भी हाथ से निकल गए और कृष्ण ने उन्हें कुछ भी नहीं दिया।

5)अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए?

उत्तर- द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं वे घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चले आए। फिर सबसे पूछते फिरते हैं तथा अपनी झोपड़ी को ढूँढ़ने लगते हैं।

6) निर्धनता के बाद मिलने वाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- निर्धनता के बाद श्रीकृष्ण की कृपा से सुदामा को धन-सम्पदा मिलती है। जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी सी झोंपड़ी हुआ करती थी, वहाँ अब स्वर्ण भवन शोभित है। कहाँ पहले पैरों में पहनने के लिए चप्पल तक नहीं थी और अब पैरों से चलने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि अब घूमने के लिए हाथी घोड़े हैं, पहले सोने के लिए केवल यह कठोर भूमि थी और आज कोमल सेज पर नींद नहीं आती है, कहाँ पहले खाने के लिए चावल भी नहीं मिलते थे और आज प्रभु की कृपा से खाने को किशमिश-मुनक्का भी उप्लब्ध हैं। परन्तु वे अच्छे नहीं लगते।

व्याकरण –विभाग

* अपादान कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो वहाँ पर अपादान कारक होता है।

हाथ से छड़ी गिर गई।

पेड़ से आम गिरा।

चूहा बिल से बाहर निकला।

* संबंध कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह का, के, की, रा, रे, री आदि होते हैं। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग, वचन के अनुसार बदल जाती हैं।

जैसे -

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।

(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।

(iii) यह सुरेश का भाई है।

(iv) यह सुनील की किताब है।

(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।

*** अधिकरण कारक**

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का ज्ञान होता है, उसे अधिकरण कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में – क्रिया या आधार को सूचित करनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के स्वरूप को अधिकरण कारक कहते है।

अधिकरण का अर्थ होता है – आधार या आश्रय। संज्ञा के जिस रूप की वजह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति में और पर होती है। भीतर, अंदर, ऊपर, बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।

जैसे -

(i) हरी घर में है।

(ii) पुस्तक मेज पर है।

(iii) पानी में मछली रहती है।

(iv) फ्रिज में सेब रखा है।

*** संबोधन कारक**

जिन शब्दों का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने में किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में – संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है,

जैसे –

(i) हे ईश्वर! रक्षा करो।

(ii) अरे! बच्चो शोर मत करो।

(iii) हे राम! यह क्या हो गया।

लेखन –विभाग

*** सब्जीवाले और ग्राहक का वार्तालाप**

ग्राहक- ये मटर कैसे दिए है भाई ?

सब्जीवाला- ले लो बाबू जी ! बहुत अच्छे मटर है, एकदम ताजा।

ग्राहक- भाव तो बताओ।

सब्जीवाला- बेचे तो पंद्रह रुपये किलो हैं पर आपसे बारह रुपये ही लेंगे।

ग्राहक- बहुत महँगे है भाई !

सब्जीवाला- क्या बताएँ बाबूजी ! मण्डी में सब्जी के भाव आसमान छू रहे हैं।

ग्राहक- फिर भी .... । कुछ तो कम करो।

सब्जीवाला- आप एक रुपया कम दे देना बाबू जी ! कहिए कितने तोल दूँ ?

ग्राहक- एक किलो मटर दे दो। और ...... एक किलो आलू भी।

सब्जीवाला- टमाटर भी ले जाइए, साहब। बहुत सस्ते हैं।

ग्राहक- कैसे ?

सब्जीवाला- पाँच रुपये किलो दे रहा हूँ। माल लुटा दिया बाबू जी।

ग्राहक- अच्छा ! दे दो आधा किलो टमाटर भी। ..... और दो नींबू भी डाल देना।

सब्जीवाला- यह लो बाबू जी। धनिया और हरी मिर्च भी रख दी है।

ग्राहक- कितने पैसे हुए ?

सब्जीवाला- सिर्फ इक्कीस रुपये।

ग्राहक- लो भाई पैसे।

*** गतिविधि- श्रीकृष्णजी अथवा सुदामा का चित्र बनाओ।**

पाठ 13 जहाँ पहिया है

- लेखक – पालगम्मी साईनाथ
- जन्म – 1957
- जन्म स्थान – मद्रास

* पाठ का सार –

लेखक इस रिपोर्ट के द्वारा बताते हैं कि जंजीरो द्वारा समाज में फैली हुई रूढ़ियाँ संकेत कर रही हैं कि हमारे पुरुष प्रधान समाज में नारी को हमेशा से दबना पड़ा है। पर जब वह दमित नारी कुछ करने की ठानती है, तो ये ज़ंजीरें लगती हैं। तमिलनाडु की महिलाओं ने इन्ही जंजीरों को तोड़ने के लिये साइकिल चलाना शुरू किया। साइकिल सीखी एक महिला ने लेखक को बताया कि उस पर साइकिल चलाने के कारण लोगो ने व्यंग किया पर उसने ध्यान नहीं दिया। लेखक बताते हैं कि फातिमा नामक एक महिला को साइकिल का इतना चाव था कि वो रोज़ आधा घंटा किराये पर साइकिल लेती थी, गरीब होने के कारण वह साइकिल खरीद नहीं सकती थी। वहाँ लगभग सभी महिलाएँ साइकिल चलाती थी। 1992में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 1500 महिलाऒ ने साइकिल चलाई। वह महिलाएँ जो पहले पिता या भाई पर आश्रित थी, वह अब आसानी से कहीं भी आ जा सकती थी। इस आंदोलन से महिलाओं के न सिर्फ आर्थिक पक्ष को मजबूत किया बल्कि उनमें एक नए आत्मविश्वास का संचार भी हुआ। पुरुष वर्ग को इससे एतराज़ नहीं होना चहिए पर यदि होता है तो भी महिलाएँ इसकी परवाह नहीं करती।

* शब्दार्थ

1) चौंकने- हैरानी
2) नवसाक्षर- नयी पढ़ी लिखी
3)स्वाधीनता-आज़ादी
4) गतिशीलता- प्रगति
5)अभिव्यक्त- प्रकट
6)प्रतीक- निशानी
7)नवसाक्षर- नयी पढ़ी लिखी
8)कौशल- प्रवीणता
9)शिविर- सीखने के कैंप
10)फब्तियाँ- ताने
11)हैसियत- औकात

* साहित्य

1) "उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई-न-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं"आपके विचार से "जंजीरों" द्वारा किन समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है?

उत्तर- "जंजीरों" द्वारा समाज में फैली हुई रुढियों और संकीर्णता की ओर संकेत कर रहे हैं। हमारे पुरुष प्रधान समाज में नारी को हमेशा से दबना पड़ा है। पर जब वह दमित नारी कुछ करने की ठानती है तो ये जंजीरे कटने लगती हैं। जैसे- स्त्री की आज़ादी और साक्षरता।

2) क्या आप लेखक की इस बात से सहमत हैं?

उत्तर- हम लेखक की बात से पूर्ण सहमत हैं क्योंकि जब-जब किसी पर जंजीरे कसी जाती है तो वह इन रूढ़ियों के बंधनों को तोड़ डालती है। समय के साथ-साथ विचारधाराओं में भी परिवर्तन होता रहता है जब ये परिवर्तन होने प्रारम्भ होते हैं तो समाज में एक जबरदस्त बदलाव आता है जो उसकी सोचने-समझने की धारा को ही बदल देता है। मनुष्य आजाद स्वभाव का प्राणी है। वह रूढ़ियों के बंधन को बर्दाश्त नहीं करता और उसे तोड़ देता है। जैसे तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव में हुआ है। महिलाओं ने साइकिल चलाना आरम्भ किया और समाज में एक नई मिसाल रखी।

3)"साइकिल आंदोलन" से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन-कौन से बदलाव आए हैं?

उत्तर- साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कई बदलाव आए हैं-

- साइकिल आंदोलन से महिलाएँ छोटे-मोटे बाहर के काम स्वयं करने लगी।
- साइकिल आंदोलन से वे अपने उत्पाद कई गाँव में ले जाकर बेचने लगी।
- साइकिल आंदोलन से उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी है।
- साइकिल आंदोलन से समय और श्रम की बचत हुई है।
- साइकिल आंदोलन ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया।

4)शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर-साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्यों?

उत्तर- शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर-साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्योंकि आर-साइकिल्स के मालिक की आय में वृद्धि हो रही थी। यहाँ तक की लेडीज़ साइकिल कम होने से महिलाऐ जेंट्स साइकिल भी खरीद रही थी। आर-साइकिल्स के मालिक ने आंदोलन का समर्थन स्वार्थवश किया।

5) प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?

उत्तर- प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-

- सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
- महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।
- महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

6) आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम जहाँ पहिया है? क्यों रखा होगा?

उत्तर- पहिया गति का प्रतीक है। लेखक ने इस पाठ का नाम "जहाँ पहिया है" तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव के साइकिल आंदोलन के कारण ही रखा होगा। उस जिले की महिलाओं ने साइकिल चलाना शुरू किया, तब से उनकी परिस्थिति में सुधार आया तथा उनके विकास को गति मिली। इसिलए लेखक कहते है कि ये बात उस जिले की है "जहाँ पहिया है"।

7) अपने मन से इस पाठ का कोई दूसरा शीर्षक सुझाइए। अपने दिए हुए शीर्षक के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर–इस पाठ के लिए उपयुक्त नाम साइकिल आंदोलन भी हो सकता था। साइकिल आंदोलन इस पाठ की केंद्रीय घटना है तथा पूरे पाठ में आंदोलन की चर्चा है, इसलिए ये शीर्षक उपयुक्त है|

व्याकरण– विभाग

उपसर्ग की परिभाषा

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में– ''उपसर्ग वह शब्दांश या अव्यय है, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में मूल शब्द के अर्थ में विशेषता ला दे या उसका अर्थ ही बदल दे।'' वे उपसर्ग कहलाते है।

अन	–	अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि।
अध्	–	अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि।
उन	–	उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि।
भर	–	भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि।
दु	–	दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि।
नि	–	निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि।

प्रत्यय की परिभाषा

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।

दूसरे अर्थ में- शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय दो शब्दों से बना है- प्रति+अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में, 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है।

प्रत्यय	धातु	कृदंत-रूप
आऊ	टिक	टिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भगोड़ा

लेखन –विभाग

(निबंध)

* भारतीय नारी पर निबंध

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पगतल में ।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुदंर समतल में ।।"
– जयशंकर प्रसाद

प्राचीन युग से ही हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है । हमारे पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूज्यनीय एवं देवीतुल्य माना गया है । हमारी धारणा रही है कि देव शक्तियाँ वहीं पर निवास करती हैं जहाँ पर समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है । इन प्राचीन ग्रंथों का

उक्त कथन आज भी उतनी ही महत्ता रखता है जितनी कि इसकी महत्ता प्राचीन काल में थी । कोई भी परिवार, समाज अथवा राष्ट्र तब तक सच्चे अर्थों में प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता जब तक वह नारी के प्रति भेदभाव, निरादर अथवा हीनभाव का त्याग नहीं करता है ।

प्राचीन काल में भारतीय नारी को विशिष्ट सम्मान व पूज्यनीय दृष्टि से देखा जाता था । सीता, सती-सावित्री, अनसूया, गायत्री आदि अगणित भारतीय नारियों ने अपना विशिष्ट स्थान सिद्ध किया है । तत्कालीन समाज में किसी भी विशिष्ट कार्य के संपादन मैं नारी की उपस्थिति महत्वपूर्ण समझी जाती थी ।कालांतर में देश पर हुए अनेक आक्रमणों के पश्चात् भारतीय नारी की दशा में भी परिवर्तन आने लगे । नारी की स्वयं की विशिष्टता एवं उसका समाज में स्थान हीन होता चला गया । अंग्रेजी शासनकाल के आते-आते भारतीय नारी की दशा अत्यंत चिंतनीय हो गई । उसे अबला की संज्ञा दी जाने लगी तथा दिन-प्रतिदिन उसे उपेक्षा एवं तिरस्कार का सामना करना पड़ा ।

नारी के अधिकारों का हनन करते हुए उसे पुरुष का आश्रित बना दिया गया । दहेज, बाल-विवाह व सती प्रथा आदि इन्हीं कुरीतियों की देन है । पुरुष ने स्वयं का वर्चस्व बनाए रखने के लिए ग्रंथों व व्याख्यानों के माध्यम से नारी को अनुगामिनी घोषित कर दिया ।अंग्रेजी शासनकाल में भी रानी लक्ष्मीबाई, चाँद बीबी आदि नारियाँ अपवाद ही थीं जिन्होंने अपनी सभी परंपराओं आदि से ऊपर उठ कर इतिहास के पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी । स्वतंत्रता संग्राम में भी भारतीय नारियों के योगदान की अनदेखी नहीं की जा सकती है ।

आज का युग परिवर्तन का युग है । भारतीय नारी की दशा में भी अभूतपूर्व परिवर्तन देखा जा सकता है । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक समाज सुधारकों समाजसेवियों तथा हमारी सरकारों ने नारी उत्थान की ओर विशेष ध्यान दिया है तथा समाज व राष्ट्र के सभी वर्गों में इसकी महत्ता को प्रकट करने का प्रयास किया है ।फलत: आज नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है । विज्ञान व तकनीकी सहित लगभग सभी क्षेत्रों में उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है । उसने समाज व राष्ट्र को यह सिद्ध कर दिखाया है कि शक्ति अथवा क्षमता की दृष्टि से वह पुरुषों से किसी भी भाँति कम नहीं है ।

निस्संदेह नारी की वर्तमान दशा में निरंतर सुधार राष्ट्र की प्रगति का मापदंड है । वह दिन दूर नहीं जब नर-नारी, सभी के सम्मिलित प्रयास फलीभूत होंगे और हमारा देश विश्व के अन्य अग्रणी देशों में से एक होगा

*** गतिविधि- साइकिल आंदोलन का चित्र बनाइए।**

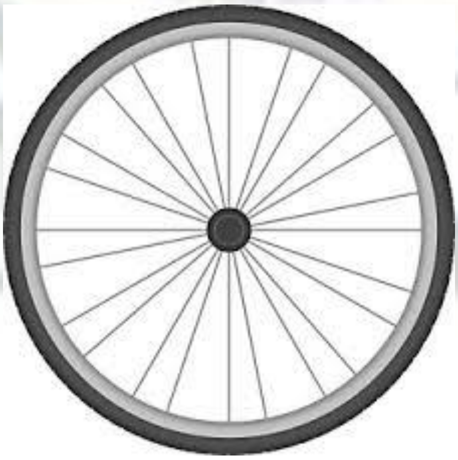

पाठ 14 अकबरी लौटा

लेखक – अन्नपूर्णानन्द वर्मा

जन्म – 21 सितंबर 1895 (काशी, उत्तर प्रदेश)

मृत्यु – 04 दिसंबर 1962

* पाठ का सार –

पंडित अन्नपूर्णानद जी ने इस कहानी में बताया है कि लाला झाऊलाल नामक व्यक्ति बहुत अमीर नहीं है। पर उन्हें गरीब भी नहीं कहा जा सकता। पत्नी के ढाई सौ रूपए माँगने तथा अपने मायके से लेने की बात पर अपनी इज्जत के लिये सात दिन में रुपये देने की बात की।पाँच दिन बीतने पर अपने मित्र बिलवासी को यह घटना सुना कर पैसे की इच्छा रखी पर उस समय उनके पास रूपए न थे। बिलवासी जी ने उसके अगले दिन आने का वादा किया जब वह समय पर न पहुँचे तो झाऊलाल चिंता में छत पर टहलते हुए पानी माँगने लगे। पत्नी द्वारा लाये हुए नापसंद लोटे में पानी पीते हुए लोटा नीचे एक अंग्रेज पर गिर गया।अंग्रेज एक लंबी चौड़ी भीड़ सहित आँगन में घुस गया और लोटे के मालिक को गाली देने लगा। बिलवासी जी ने बड़ी चतुराई से अंग्रेज को ही मुर्ख बनाकर उसी लोटे को अकबरी लोटा बताकर उसे 500 रूपए में बेच दिया। इससे रुपये का इंतजाम भी हो गया और झाऊलाल की इज्जत भी बच गई। इससे लाला बहुत प्रसन्न हुए उसने बिलवासी जी को बहुत धन्यवाद दिया।बिलवासी ने पत्नी के संदूक से लाला की मदद के लिये निकले गए ढाई सौ रुपये उसके संदूक में वापस रख दिए फिर चैन की नींद सो गए।

* शब्दार्थ

1)ढाई सौ – 250 | 2)रोब – अकड़
3)प्रतिष्ठा – इज्जत | 4)गाथाएँ – कहानियाँ
5)दुम – पूंछ | 6)विपदा – मुसीबत
7)खुक्ख – खाली हाथ | 8)प्रकट – उपस्थित
9)बेढ़ंगी – बेकार | 10)वेग – गति
11)ओझल – गायब | 12)ईजाद – खोज
13)प्रधान – मुख्य | 14)पूर्व – पहले
15)विज्ञ – ज्ञानी | 16)सुशिक्षित – पढ़ा-लिखा

* साहित्य-विभाग

1) "लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।" लाला झाउलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे?

उत्तर– एक सभ्य मनुष्य अपनी पत्नी का सम्मान करता है। लाला झाउलाल सभ्य मनुष्य थे। कहानी में लाला झाउलाल छह दिनों तक भी रूपयों का इंतजाम नहीं कर पाए थे इसलिए वह बहुत दुःखी और शर्मिन्दा थे। और इसीलिए उन्होंने लोटा चुपचाप ले लिया और पानी पीने लगे।

2) "लाला झाउलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।"आपके विचार से लाला झाउलाल ने कौन-कौन सी बातें समझ ली होंगी?

उत्तर- लाला भीड़ को घर में घुसते देख ही समझ गए कि उनके हाथ से छूटा लोटा जरूर किसी पर गिरा है। जिसकी शिकायत लेकर ये भीड़ उनके घर में चली आ रही थी।

3)बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था?

उत्तर- बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से चोरी करके निकाल कर किया था। यद्यपि चाबी उसकी पत्नी की सोने की चेन में बँधी रहती थी, पर उन्होंने चुपचाप उसे उतार कर ताली से संदूक खोल लिया था और रुपए निकाल लिए थे। बाद में वे रुपए चुपचाप वहीं रख भी दिए। पत्नी कुछ न जान पाई।

4) आपके विचार में अंग्रेज ने वह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया?

उत्तर- अंग्रेज पुरानी ऐतिहासिक महत्त्व की चीज़े खरीदने के शौकीन होते हैं। उस अंग्रेज का एक पड़ोसी मेजर डगलस पुरानी चीज़ों में उससे बाजी मारने का दावा करता रहता था। उसने एक दिन जहाँगीरी अंडा दिखाकर कहा था कि वह इसे दिल्ली से 300 रुपए में लाया है। वह लोटा अकबरी था ही नहीं, बिलवासी ने उसे मूर्ख बनाया था। इस लोटे को दिखाकर वह मेजर डगलस को नीचा दिखाना चाहता था और स्वंय को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहता था।

5)पं बिलवासी मिश्र कहाँ आते दिखाई पड़े? उन्होंने आते ही क्या किया? उन्होंने अंग्रेज के साथ किस प्रकार सहानुभूति प्रकट की?

उत्तर- पं बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़ कर बाकी जितने लोग थे सबको बाहर कर रास्ता दिखाया और फिर आगँन में कुर्सी रखकर उन्होंने उस अंग्रेज से कहा कि उसके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है। इसलिए वह आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए। जब पं बिलवासी ने अंग्रेज को बैठने को कहा तो अंग्रेज बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गया। लाला झाऊलाल की ओर इशारा करके अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा कि क्या वे लाला को जानते हैं? बिलवासी बिलकुल मुकर गए और कहते हैं कि वे लाला को बिलकुल नहीं जानते और न ही वह ऐसे आदमी को जानना चाहते हैं जो राह चलते व्यक्तियों को लोटे से चोट पहुँचाए।

6)इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए। मैं नहीं बताँऊंगा।'' बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कही?

उत्तर'बिलवासी' जी ने यह बात 'लाला झाऊलाल' से कही क्योंकि उसने ये पैसे अपनी पत्नी के संदूक से चुराए थे। इस रहस्य को वह 'झाऊलाल' के सामने खोलना नहीं चाहते थे।

7)''उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।'' समस्या झाऊलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी तो क्यों?

''बिलवासी'' जी ने अपने मित्र ''लाला झाऊलाल'' की सहायता करने के लिए अपनी पत्नी के संदूक से रूपए चुराए थे। ''बिलवासी'' जी अपनी पत्नी के सोने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे चुपचाप उसी तरह रूपए संदूक में रखना चाहते थे। यहाँ समस्या झाऊलाल की नहीं बल्कि बिलवासी जी की थी। इसीलिए बिलवासी जी को उस रात देर तक नींद नहीं आ रही थी।

व्याकरण

* मुहावरा की परिभाषा

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।
साधारण अर्थ में – मुहावरा किसी भाषा में आने वाला वह वाक्यांश है, जो अपने शाब्दिक अर्थ को न बताकर किसी विशेष अर्थ को बताता है।

1)अँगारे बरसना- अत्यधिक गर्मी पड़ना।
- जून मास की दोपहरी में अंगारे बरसते प्रतीत होते हैं।
2)गारों पर पैर रखना- कठिन कार्य करना।
- युद्ध के मैदान में हमारे सैनिकों ने अंगारों पर पैर रखकर विजय प्राप्त की।
3)अँगारे सिर पर धरना- विपत्ति मोल लेना।
- सोच-समझकर काम करना चाहिए। उससे झगड़ा लेकर व्यर्थ ही अंगारे सिर पर मत धरो।
4)अँगूठा चूसना- बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।
- कभी तो समझदारी की बात किया करो। कब तक अंगूठा चूसते रहोगे?
5)आस्तीन का साँप- कपटी मित्र।
- प्रदीप से अपनी व्यक्तिगत बात मत कहना, वह आस्तीन का साँप है; क्योंकि आपकी सभी बातें वह अध्यापक महोदय को बता देता है।
6)कान भरना- चुगली करना।
- मोहन ने सोहन से कहा कि आज साहब नाराज हैं, किसी ने उनके कान भरे हैं।
7)गाल बजाना- डींग मारना।
- केवल गाल बजाने से सफलता नहीं मिल सकती, इसके लिए परिश्रम भी परम आवश्यक है।
8)घी के दीये जलाना- खुशी मनाना।
- अपने प्रतिद्वन्द्वी की हार पर सुनील ने घी के दीये जलाए।
9)जी-जान लड़ाना- बहुत परिश्रम करना।
- हमने तो कार्यक्रम की सफलता के लिए जी-जान लड़ा दी, किन्तु उन्हें कोई बात पसन्द ही नहीं आती।
10)दंग रह जाना- आश्चर्यचकित होना।
- बाबा के चमत्कारों को देखकर मैं तो दंग रह गया।
11)दाँत खट्टे करना- हरा देना।
- भारतीय सैनिकों ने कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।
12)पानी फेर देना- निराश कर देना।
- अनमोल ने विद्यालय छोड़कर अपने पिता की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।
13)बाँछे खिल जाना- प्रसन्नता से भर उठना।।
- अपनी प्रोन्नति का समाचार सुनकर शशांक की बाँछे खिल गईं।
14)हवा से बातें करना- बहुत तेज गति से दौड़ना।
- चेतक राणा के सवार होते ही हवा से बातें करने लगता था।

15)होश उड़ जाना- घबरा जाना।
- सामने से शेर को आता देखकर शिकारी के होश उड़ गए।

लेखन -विभाग

* कहानी- पुजारी की कहानी

एक शहर में प्राचीनकाल का एक बहुत पुराना मन्दिर था, मन्दिर के चारो तरफ एक चार-दीवारी लगी हुई थी और के अंदर एक खूब सुंदर बगीचा लगाया हुआ था जिसमें बिभिन्न प्रकार के सुंदर-सुंदर पेड़-पौंधे लगाये हुए थे जिसकी वजह से वो मन्दिर और भी सुंदर दिखता था।मन्दिर में भगवान का पूजा-पाठ करने के लिये एक पुजारी जी रहते थे, और वही बगीचे का भी देखभाल रखते थे क्यूँकि ये करने से उन्हें बहुत आनन्द मिलता था।उस मन्दिर के बगल में एक और छोटा सा मन्दिर था जिसमें एक बहुत बुजुर्ग पुजारी रहते थे और वो उस छोटे मँदिर के भगवान की मूर्ति का पूजा पाठ करते थे।दोनों मन्दिर के बीच में एक दीवार थी जो उन दोनों मन्दिर को अलग करती थी।एक दिन उस बडी मन्दिर में दर्शन करने के लिये कोई बड़ा अदमी आने वाला था और उसको ख़ुश करने के लिये बड़े मन्दिर के पुजारी जी मन्दिर और बगीचे की साफ-सफाई करने में लग गये, 2 दिन कड़ी मेहनत करके उन्होंने मन्दिर और बगीचे की ऐसी सफाई कर दी कि बगीचे में एक सूखा पत्ता भी नहीं पड़ा था।

उस छोटे मन्दिर का बुजुर्ग पुजारी दीवार के उस पार से ये सब बड़े ध्यान से देख रहा था।मन्दिर और बगीचे कि साफ-सफाई करने के बाद बड़े मन्दिर के पुजारी जी अपनी वाह-वाही सुनने के लिये उस छोटे मन्दिर के पुजारी के पास गये और बोले कि "अभी बगीचा और मन्दिर कितना सुंदर और मनमोहित लग रहा है।"तो वो बुजुर्ग पुजारी जी ने कहा कि आपने साफ-सफाई तो बड़े अच्छे से की लेकिन उसमें एक चीज कि कमी है जो बगीचे की सुन्दरता को अधूरा बना रहा है।बड़े मन्दिर के पुजारी ने पूछा कि वो क्या है?

बुजुर्ग पुजारी ने कहा कि आप मुझे दीवार के उस पार खीचो फिर मैं आप को बताता हूँ कि क्या कमी रह गयी है, उन्होंने बुजुर्ग पुजारी को दीवार के उस पार खींच लिया।दीवार के उस पार आने के बाद वो बुजुर्ग पुजारी सीधा बगीचे की तरफ चला गया और वहा जाकर सारे पेड़ों को पकड़कर धीरे-धीरे हिला दिया जिससे बगीचे में थोड़े सूखे और हरे पत्ते गिर गये। बुजुर्ग पुजारी ने कहा कि अब बगीचा बहुत सुंदर लग रहा है।

सीख: आप जैसे भी हो बहुत अच्छे हो |

* गतिविधि- अकबर का चित्र बनाओ अथवा अकबरी लौटा का चित्र बनाओ।

भारत की खोज
पाठ 4 युगों का दौर

1 मौर्य साम्राज्य के अवसान के बाद उसका स्थान किसने लिया?
उ- शुंग वंश ने
2 हेलिओदो स्तंभ के नाम से क्या प्रसिद्ध है?
उ- ग्रेनाइट पत्थर की एक लाट
3 बौद्ध धर्म किन दो संप्रदायों में बट गया?
उ- महायान और हीनयान
4 नागार्जुन कौन थे?
उ- महान व्यक्ति एवं बौद्ध शास्त्र एवं भारतीय दर्शन के बड़े विदवान थे।
5 संस्कृत भाषा का निर्माण कब व किसने किया था?
उ- संस्कृत भाषा का निर्माण 2600 वर्ष पहले पाणिनि ने किया था।
6 कुषाणों का प्रसिदध शासक कौन था?
उ- कुषाणों का प्रसिदध शासक नागार्जुन था।
7 कुषाणों ने अपना साम्राज्य कहाँ स्थापित किया?
उ- कुषाणों ने अपना साम्राज्य एक शक्तिशाली भारतीयकरण में स्थापित किया।
8 समुद्रगुप्त को भारत का क्या कहा जाता है?
उ- समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा जाता है।
9 कालिदास की प्रमुख रचना कौन-सी थी?
उ- कालिदास की प्रमुख रचना मेघदूत और मृच्छकटिकम थी।
10 कंबोडिया की वर्णमाला कहाँ से ली गई?
उ-कंबोडिया की वर्णमाला दक्षिण भारत से ली गई हैं।
11 शून्य की खोज किसने की?
उ- शून्य की खोज आर्यभट ने की।

भारत की खोज
पाठ 5 नई समस्याएँ

1 हर्षवर्धन कहाँ पर शासन करता था?
उ-उत्तर भारत में
2 चीनी यात्री हुआन कहाँ पर अध्ययन करते थे?
उ- नालंदा में
3 सुलतान महमूद गजनी ने भारत पर कब आक्रमण किया?
उ- 1000 ई के आसपास
4 शाहबुदीन कब दिल्ली की गददी पर बैठा?
उ- 1192
5 औरंगजेब की मृत्यु कब हुई ?
उ- 1707
6 भारत में मुगल साम्राज्य की नींव किसने डाली?
उ-भारत में मुगल साम्राज्य की नींव बाबरने डाली।
7 कबीर के गुरु कौन थे?
उ- कबीर के गुरु संत रामानंद जी थे।
8 सिख धर्म के स्थापक कौन थे?
उ- सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक थे।
9 अकबर ने भारत के शासन की डोर कब सँभाली?
उ- अकबर ने भारत केश शासक की डोर 1556 में सँभाली।
10 " पदमावत" की रचना किसने की?
उ- मलिक मोहम्मद जायसी ने "पदमावत "की रचना की।
11 महमूद के बाद गज़नी पर किसका अधिकार हुआ?
उ- महमूद के बाद गजनी पर शाहबुदोन गौरी का अधिकार हुआ।
12 प्लासी के युदध में किसकी जीत हुई?
उ-प्लासी के युदध में रबिर्ट क्लाइव की जीत हुई।

कविता- 15 सूर के पद

कवि सूरदास

जन्म **1478** ईस्वी

मृत्यु **1580** ईस्वी

* पाठ का सार –

पहले पद में सूरदास जी ने कृष्ण के मन के भावों का सुन्दर वर्णन है। कृष्ण चाहते थे कि उनकी चोटी भाई बलराम की तरह ज़मीन पर लोटे। यद्यपि माँ यशोदा नियम से उनके बाल धोती थी और गूंथती थी। फिर भी उनके बाल लंबे नहीं होते थे। दूसरे पद में एक ग्वालन माँ यशोदा को उलाहना देते हुए कहती हैं कि नटखट कृष्ण प्रतिदिन उनके घर से मक्खन चोरी करके खा जाते हैं। वह यशोदा से कहती हैं कि उसने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है जो दूसरों से अलग है। ग्वालन की शिकायत में सूरदास जी द्वारा वात्सल्य प्रेम की अभिव्यक्ति सराहनीय है।

* शब्दार्थ

1 कबहिं- कब

2 किती - कितनी

3 पियत- पिलाना

4 अजहूँ - आज भी

5 बल- बलराम

6 बेनी- चोटी

7 लाँबी-मोटी- लंबी-मोटी

8 काढ़त- बाल बनाना

9 गुहत- गूँथना

10 न्हवावत- नहलाना

11 भुइँ- भूमि

12 लोटी- लोटने लगी

13 काचौ- कच्चा

14 पियावति- पिलाती

15 लाल- बेटा

16 माखन- मक्खन

17 दुपहर - दोपहर

18 ढूँढ़ि- खोजकर

19 आपही- अपने आप

20 किवारि- दरवाजा

21 पैठि- घुसकर

22 सखनि - दोस्तमित्र

23 उखल- ओखली

* अतिलघ

1) श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।

- माखनचोर

2) श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।

पर्यायवाची शब्द

श्रीकृष्ण :- वासुदेव, सारथी, मुरलीधर, हरि, नन्दलला।

प्रश्न-अभ्यास –

1) बालक कृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर- यशोदा माँ बालक कृष्ण को लोभ देती थी कि यदि वह नियम से प्रतिदिन दूध पीएँगे तो उनकी चोटी भाई बलराम की तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। कृष्ण अपने बाल बढ़ाना चाहते थे इसलिए वह ना चाहते हुए भी दूध पीने के लिए तैयार हो गए।

2) कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर- कृष्ण अपनी चोटी के बारे में सोचते थे कि उनकी चोटी भी दूध पीने से बलराम भैया के जैसी लंबी-मोटी हो जाएगी। माता यशोदा हर रोज उन्हें पीने को दूध देती थी, फिर भी उनकी चोटी बढ़ नहीं रही थी।

3)दूध की तुलना में कृष्ण कौन-सा पदार्थ अधिक पसंद करते थे?

उत्तर- कृष्ण अपनी माँ के कहने पर दूध पीते थे परंतु उन्हें दूध पीना ज़रा भी पसंद नहीं था। दूध पीने की जगह मक्खन और रोटी खाना पसंद करते थे। माँ के बार-बार दूध पिलाने के कारण वह मक्खन और रोटी नहीं खा पाते थे।

4)"तैं ही पूत अनोखौ जायौ" पंक्ति में ग्वालन के मन के कौन से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर- ये शब्द ग्वालन ने यशोदा से कहे। वह शिकायत करती हुई कहती है कि नटखट कृष्ण प्रतिदिन उनके घर से मक्खन चोरी करके खा जाते हैं। वह यशोदा से कहती हैं कि उन्होंने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है जो दूसरों से अलग हैं।

5)मक्खन चुराते समय कृष्ण थोड़ा सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?

उत्तर- श्री कृष्ण बहुत छोटे थे और छींका बहुत ऊँचा था। जब वह छींका से मक्खन चोरी करते थे तो थोड़ा मक्खन इधर-उधर बिखर जाता था क्योंकि उनका हाथ छींके तक नही पहुँच पाता था। कृष्ण ऐसा जान-बूझकर भी करते थे ताकि उनकी चोरी पकड़ी जाए और माँ उनसे नाराज़ हो जाए तथा माँ को मनाने का अवसर मिले।

6)दोनों पदों में से आपको कौन सा पद अधिक पसंद आया और क्यों?

उत्तर- दोनों पदों में से मुझे पहला पद ज़्यादा पसंद आया ज्यों की सूरदास जी ने भक्तिरस में डूबकर बाल सुलभ व्यवहार का मनमोहक चित्र प्रस्तुत किया है। वात्सल्य रास की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। बालक श्री कृष्ण का अपनी माँ से शिकायत करना बड़े सुन्दर ढंग से बताया गया है।

व्याकरण

* अलंकार

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है- अलम- कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है "आभूषण।"मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवर्ती के कारण ही अलंकारों को जन्म दिया गया है। जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अथार्त जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

*** अलंकार के भेद**

अलंकार के मुख्यतः दो भेद होते हैंः

1) शब्दालंकार 2) अर्थालंकार

1) शब्दालंकार

जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्यों को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। यानि किसी काव्य में कोई विशेष शब्द रखने से सौन्दर्य आए और कोई पर्यायवाची शब्द रखने से लुप्त हो जाये तो यह शब्दालंकार कहलाता है।

"भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही"

इस उदाहरण में विशिष्ट व्यंजनों के प्रयोग से काव्य में सौंदर्य उत्पन्न हुआ है। यदि "भूमि" के बजाय उसका पर्यायवाची "पृथ्वी", "भूप" के बजाय उसका पर्यायवाची "राजा" रख दे तो काव्य का सारा चमत्कार खत्म हो जाएगा। इस काव्य पंक्ति में उदाहरण के कारण सौंदर्य है। अतः इसमें शब्दालंकार है।

2) अर्थालंकार

जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है तब यह अर्थालंकार के अंतर्गत आता है ।

उदाहरण के लिए–

"चट्टान जैसे भारी स्वर"

इस उदाहरण में चट्टान जैसे के अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न हुआ है। यदि इसके स्थान पर "शीला" जैसे शब्द रख दिए जाएं तो भी अर्थ में अधिक अंतर नहीं आएगा। इसलिए इस काव्य पंक्ति में अर्थालंकार का प्रयोग हुआ है।

* लेखन –बोध

विद्यालय में योग-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण,
सेक्टर 30,
दिनांक-26 अप्रैल, 2019
चण्डीग़ढ़, ज़िरखपूर।

विषय- योग-शिक्षा का महत्त्व।
महोदय,

जन-जन की आवाज, जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रसिद्ध आपके पत्र के माध्यम से मैं विद्यालय में योग-शिक्षा के महत्त्व को बताना चाहती हूँ और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ।
योग-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगें। योग शिक्षा उनके स्वास्थय के लिए बहुत अधिक लाभदायक है। योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकाल सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर सकते हैं। योग के जरिए वे अपने तन-मन दोनों को स्वस्थ रख सकते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायता मिलती रहेगी।
आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से पाठकों को योग के प्रति जागरूक करे और लोगों को योग-शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।
धन्यवाद।
भवदीया
(नाम, पता, दूरभाष)

* गतिविधि- श्रीकृष्ण का चित्र बनाओ।

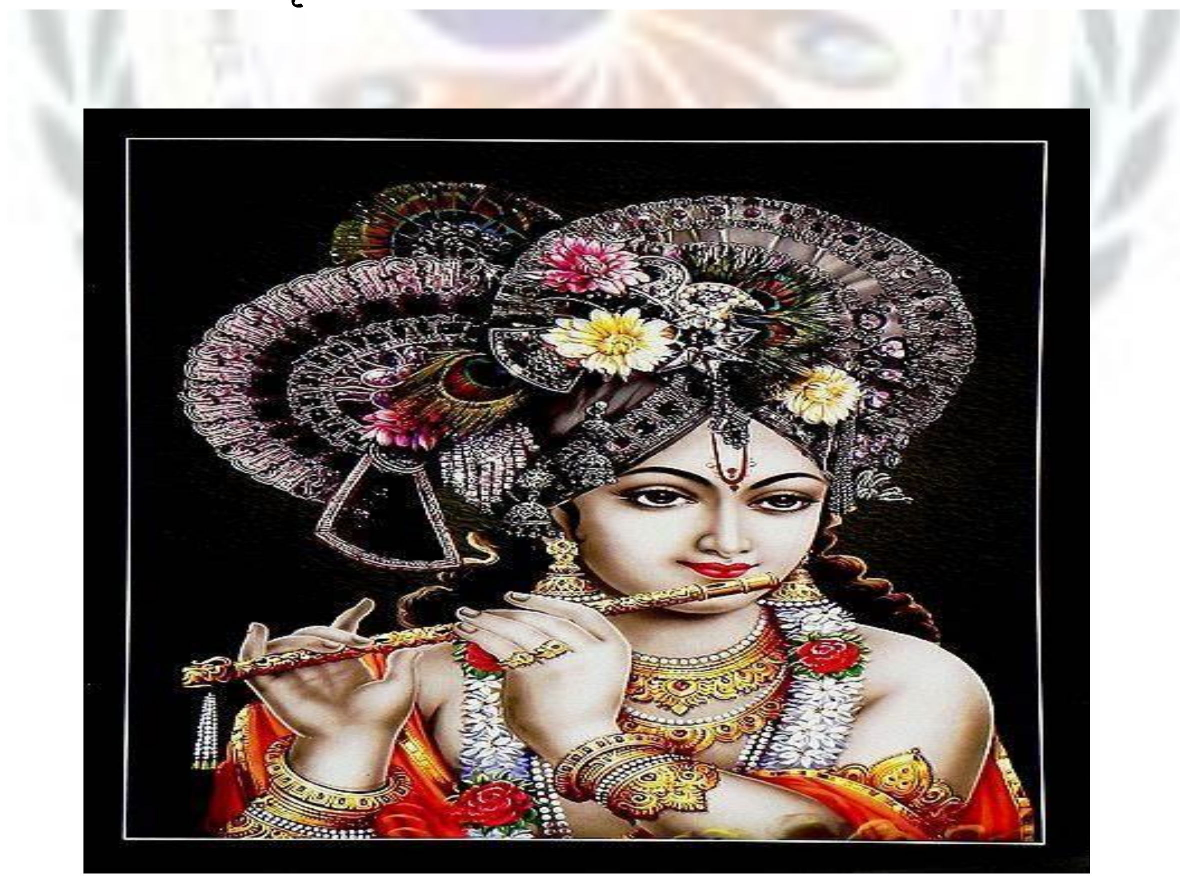

भारत की खोज
पाठ 6 अंतिम दौर -एक

1 राजा राममोहन राय किसके प्रवर्तक थे?
उ पत्रकारिता के
2 पहला अखबार कब और कौन - सी भाषा में लिखा गया?
उ 1818 अंग्रेजी में
3 भारतीय सेना ने कब बगावत की?
उ 1857 में
4 विवेकानंद ने किस मिशन की स्थापना की?
उ रामकृष्ण मिशन
5 बीसवी शताब्दी में कौन से दो व्यक्तित्व सामने आए?
उ गांधीजी और टैगोर ।
6 नए पूँजीवाद का भारत के किस ढ़ाँचे पर प्रभाव पड़ा?
उ-नए पूँजीवाद का भारत के आर्थिक ढ़ाँचे पर प्रभाव पड़ा।
7 अंग्रेजी शासन की धुरी किसे कहा जाता था?
उ- कलेक्टर या ज़िला मजिस्ट्रेट को शासन की धुरी कहा जाता था।
8 राजा राममोहन राय की पत्रकारिता का संबंध किससे था?
उ- राजा राममोहन राय की पत्रकारिता का संबंध मनुष्य के विचारों को जागरुक करने का था।
9 राजा राममोहन राय ने किसकी स्थापना की?
उ- राजा राममोहन राय ने " ब्रहम-समाज " की स्थापना की।
10 आर्य समाज का नारा क्या था?
उ- आर्य समाज का नारा " वेदों की ओर लौटो " था।
11 सर सैयद अहमद खाँ कौन थे?
उ- सर सैयद अहमद खाँ एक ऐसे नेता थे,जो यह सोचते थे कि ब्रिटिश सत्ता के सहयोग से वे मुसलमानों की स्थिति को सुधार सकते थे।

पाठ 7 अंतिम दौर-दो

1 पंजाब में क्या लागू हुआ?
उ मार्शल लाँ
2 किसके नेतृत्व में कांगेस सक्रिय बनी?
उ गांधी जी के
3 गांधी जी मुलतः कैसे व्यक्ति थे?
उ धर्मप्राण
4 मिस्टर जिन्ना की माँग क्या थी?
उ भारत के दो राष्ट्र हो- हिन्दू और मुसलमान
5 कांग्रेस का विभाजन किन दो दलों में हुआ?
उ- कांग्रेस का विभाजन 1) नरम दल और 2) गरम दल में हुआ।
6 गाँधीजी की शिक्षा का सार क्या था?
उ- गाँधीजी की शिक्षा का सार- निर्भयता और सत्य इनसे जुड़ा हुआ कर्म।
7 कांग्रेस संगठन का लक्ष्य और आधार क्या था?
उ- कांग्रेस संगठन का लक्ष्य और आधार सक्रियता था।
8 मुस्लिम लीग के कर्णधार कौन थे?
उ- मुस्लिम लीग के कर्णधार मोहम्मद अली जिन्ना थे।
9 अंग्रेजो ने " मार्शल लॉ " कहाँ लागू किया?
उ- अंग्रेजो ने "मार्शल लॉ " पंजाब में लागू किया।

पाठ 18 टोपी

लेखक- संजय

* पाठ सार-

यह कहानी एक गौरैया के जोड़े की है। उन दोनों में बहुत प्रेम था। एक-दूसरे के बगैर वे कोई भी काम नहीं करते थे। एक बार मादा गौरैया ने किसी मनुष्य को कपड़े पहने देखा तो उसकी प्रशंसा की परंतु नर गौरैया ने कहा कि वस्त्रों से मनुष्य सुन्दर नहीं लगता, वह तो मनुष्य के वास्तविक सौंदर्य को ढाक लेता है। परन्तु मादा गौरैया को टोपी पहनने का मन करता है, नर गौरैया कहता है कि हमें वस्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं हम तो ऐसे ही ठीक हैं। मगर मादा गौरैया अपनी जिद की पक्की थी, उसने निश्चय कर लिया था कि वह टोपी बनवाकर ही रहेगी। एक दिन उसे रूई का टुकड़ा मिला, जिसे पहले वह धुनिया के पास ले जा कर धुनवाती है, फिर सूत कतवाने के लिए कोरी के पास ले जाती है तथा दोनों को बनवाई आधा-आधा हिस्सा मजदूरी दे देती है। गौरैया धागा बनवाने के बाद बुनकर के पास जाती है और बुनकर को कपड़े का आधा हिस्सा मजदूरी देकर तथा अपना कपड़ा लेकर दर्जी के पास जाती है तथा उसे भी उसकी मजदूरी देकर, उससे दो टोपियाँ बनवा लेती है। दर्जी ने खुश हो कर उसकी टोपी में पाँच ऊन के फूल भी लगा दिए। चिड़िया की टोपी बहुत सुन्दर बनी थी। चिड़िया के मन में राजा से मिलने की इच्छा उत्पन्न हुई, तो वह राजा के महल की ओर उड़ चली। चिड़िया राजा के महल पहुँची, तो राजा छत पर मालिश करवा रहा था। चिड़िया ने राजा का मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। राजा को क्रोध आ गया। उसने अपने सैनिकों को उस चिड़िया को मारने के लिये कहा पर सैनिकों ने उसे मारा नहीं राजा के कहने पर उसकी टोपी छीन ली। राजा उसकी सुन्दर टोपी देखकर हैरान था कि उस चिड़िया के पास इतनी सुन्दर टोपी कहाँ से आई। राजा हैरान था की इतनी सुन्दर टोपी किसने बनाई। उसने अपने सेवकों द्वारा उस दर्ज़ी को बुलवाया। दर्जी ने टोपी सुन्दर बनने का कारण अच्छा कपड़ा बताया। इस प्रकार क्रमशः बुनकर, कोरी व धुनिया को बुलावा भेजा। उन्होंने बताया की उन्होंने बहुत अच्छा काम इसलिए किया है क्योंकि उन्हें मजदूरी बहुत अच्छी मिली थी। चिड़िया ने राजा को कहा कि उसने सारा कार्य पूरी कीमत चुकाकर करवाया है। वह राजा पर आरोप लगाती है कि राजा कंगाल है, तभी प्रजा को बहुत सताता है, उन पर कर लगाता है और तभी उसने उसकी टोपी भी छीन ली है क्योंकि वह खुद इतनी अच्छी टोपी नहीं बनवा सकता। राजा को अपनी पोल खुलने का डर हो जाता है इसलिए वह चिड़िया की टोपी वापस कर देता है। चिड़िया राजा को डरपोक-डरपोक कहती हुई निकल जाती है।

*शब्दार्थ

1)एक दूजे- एक दूसरे
2)परम संगी- मुख्य साथी
3)भिनसार- प्रातः काल
4)दाना चुगने और झुटपुटा- वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो
5)खोंते - घोंसले
6)थकान- कमज़ोरी
7)हिस्सेदारी- भागीदारी
8)फबता- सुन्दर
9)तपाक- जल्दी
10)बदसूरत- बुरा दिखना
11)लटजीरा- एक पौधा

12)कुदरती- स्वाभाविक

13) सुघड़- सुन्दर

14)काया- तन

15)कटाव- आकार

16)रोंवें-रोंवें की रंगत- रंग

* साहित्य

1)गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला?

उत्तर- गवरइया और गवरा के बीच मनुष्य द्वारा पहने गए कपड़ों को लेकर बहस हुई। गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर, एक रुई का फाहा मिलने से मिला। जिससे उसने टोपी बनवाई और अपनी इच्छा पूरी की।

2)टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस-किस के पास गई? टोपी बनने तक के एक-एक कार्य को लिखें।

उत्तर- टोपी बनवाने के लिये गवरइया पहले धुनिया के पास रुई धुनवाने के लिए गई, फिर वह कोरी के पास तकवाने के लिये गई, इसके बाद बुनकर के पास कपड़ा बुनवाने के लिये और अंत में दर्जी के पास टोपी सिलवाने के लिये गई। तब उसकी टोपी तैयार हुई।

3) गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए?

उत्तर- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने इसलिये जड़ दिए क्योंकि उसने दर्जी को मजदूरी के रूप में आधा कपड़ा दे दिया था। खुश होकर उसने टोपी को और सुन्दर बना दिया था।

4) गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है, तर्क सहित लिखिए।

- सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। उत्साह से ही हमारे मन में किसी भी कार्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। यदि हम किसी भी कार्य को बेमन से करेंगे तो निश्चय ही हमें उस कार्य में पूर्णतया सफलता नहीं मिलेगी।

5) यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने-अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार कैसा होता?

- यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने-अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार सामान्य होता और सर्वप्रथम वे राजा का काम करते क्योंकि उनका काम ज्यादा था।

व्याकरण

हिंदी में विराम चिह्न बहुत महत्वपूर्ण है विराम चिह्न का उपयोग लिखनेके समय उपयोग किया जाता है यह वाक्य के प्रकार और उसके स्थान के बारे मे भी जानकारी देता हैं। विराम चिह्न वाक्य के अनुसार बदलते है।

दुसरे शब्दो मे यह कह सकते है कि भाषा में स्थान -विशेष पर रुकने अथवा उतार -

चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें ही ' विराम चिन्ह ' कहते है-

l) पूर्ण विराम (|) (Full Stop)

2) अल्प विराम (,) (Comma)

3) अर्ध विराम (;) (Semicolon)

4) प्रशनवाचक चिन्ह (?) (Question Mark)

5) विस्मयादिवाचक चिन्ह (!) (Exclamation Mark)

6) निर्देशक (—) (Dash)

7) योजक (-) (Hyphen)

8) उद्धरण चिन्ह (" ") (Quotation Mark)

9) विवरण चिन्ह (:-) (Sign of Following)

लेखन- विभाग

संवाद लेखन

* पिता और पुत्र में वार्तालाप

पिता- बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षाफल ?

पुत्र- बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।

पिता- क्यों ? बताओ तो कितने अंक आए हैं ?

पुत्र- हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी, अर्थशास्त्र में बहत्तर......

पिता- अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं ? कोई प्रश्न छूट गया था ?

पुत्र- पूरा तो नहीं छूटा ..... सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह अधूरा रह गया।

पिता- तभी तो...... I अलग-अलग प्रश्नों के समय निर्धारित कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह ही गया।

पुत्र- गणित का पर्चा अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक आए हैं।

पिता- यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी लाने में सहायता मिलती है।

पुत्र- पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।

पिता- एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने चाहिए।

पुत्र- एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।

पिता- अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?
पुत्र- बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे कई छात्र आगे हैं।
पिता- सब अभ्यास की बात है बेटे ! सुना नहीं 'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।' तुम तो स्वयं समझदार हो। अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट है। दूरदर्शन और खेल का समय कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।
पुत्र- जी पिताजी ! मैं कोशिश करूँगा कि अगली बार गणित में पूरे अंक लाऊँ।
पिता- मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

*** गतिविधि- चिड़िया का चित्र बनाओ।**

भारत की खोज
पाठ 8 तनाव

1 भारत में तनाव कब बढा?
उ- 1942 में
2 भारत छोड़ो प्रस्ताव कब और कहाँ हुआ?
उ मुंबई में 7,8 अगस्त 1942 को।
3 भारत के शहरों पर किस तरह के हमलों की संभावना थी?
उ- भारत के शहरों पर हवाई हमलों की संभावना बढ़ गई थी।
4 " भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर किसने विचार प्रस्तुत किया था?
उ- अखिल भारतीय कांग्रेस ने " भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर विचार प्रस्तुत किया।
5 किसके नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरू करने की बात कही गई?
उ- गांधीजी के नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरू करने की बात कही गई।
6 कांग्रेस कमेटी ने ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र से क्या अपील की?
उ- कांग्रेस कमेटी ने भारत व संसार के सभी गुलाम देशों की आज़ादी की- अपील की।
7 गांधीजी और कांग्रेस साभपति मौलाना अबुल कलाम ने अपने भाषण में क्या स्पष्ट किया?
उ- गांधीजी और कांग्रेस सभापति मौलाना अबुल कलाम ने अपने भाषण में अगले कदम की घोषणा कर दी।

भारत की खोज
पाठ 9 दो पृष्ठभूमियाँ भारतीय और अंग्रेजी

1 भारत की बीमारी क्या थी?
उ अकाल
2 भारत किससे बीमार था?
उ तन और मन दोनों से।
3 ब्रिटिश शासन के अंतिम दौर में भारत में कहाँ-कहाँ अकाल का प्रभाव रहा?
उ-ब्रिटिश शासन के अंतिम दौर में बंगाल और बिहार में अकाल का प्रभाव रहा।
4 तन और मन दोनों से कौन बीमार था?
उ- तन और मन दोनों से भारत बीमार था।
5 अकाल ने भारत की कैसी तस्वीर को उजागर कर दिया?
उ- अकाल ने भारत की बदहालो और बदसूरती की तस्वीर को उजागर कर दिया।
6 अकसर भारत को कैसा देश कहा जाता है?
उ- अकसर भारत को अंतर्विरोधों का देश कहा जाता है।
7नेताओं की गिरफ्तारियों का क्या परिणाम हुआ?
उ- नेताओं की गिरफ्तारियों से जनता का क्रोध ओर बढ़ गया।